International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.121-122

नृत्य के क्षेत्र में भावी संभावनाएँ

डॉ. कविता सक्सेना*

प्रस्तावना

निरन्तर परिवर्तनशील रहना ही प्रकृति का नियम है। देश व काल की परिस्थितियों के के अनुरूप ही समाज में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। देश व समाज के विकास में तत्कालीन परिस्थिति का सर्वाधिक प्रभाव देखने को मिलता हैं। किसी भी देश व समाज की परिस्थितियों का प्रभाव वहां की प्रत्येक कला के विकास पर निश्चित रूप से पड़ता हैं।

प्रदर्शनात्मक कला के रूप में नृत्य कला का स्वरूप अपने प्राचीन काल से वर्तमान काल तक निरन्तर परिवर्तनशील रहा हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का समय भारतीय इतिहास में ''पुनर्जागरण काल'' माना जाता हैं। स्वतंत्र भारत देश की नवीन सामाजिक व्यवस्था तथा परिस्थिति के फलस्वरूप भारतीय कलाओं को एक नया स्वरूप, नई दिशा व नई दृष्टि प्राप्त हुई। प्रदर्शनात्मक कलाओं में से एक ''कथक नृत्य'' भी इससे अछूता न रह सका। ''कथक नृत्य'', जो कभी मन्दिरों की शोभा हुआ करता था, वहीं कालान्तर में मन्दिरों की सीढियों से उतर कर विलासी नवाबों, राजा–महाराजाओं की महफिलों व दरबारों की शोभा बन गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश व समाज की परिवर्तित परिस्थितियों का देश की समस्त कलाओं पर भी प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव से कथक नृत्य भी अछूता नहीं रहा। आधुनिक युग में अब कथन नृत्य सामाजिक रंगमंच की शोभा बढा रहा हैं। कथक नृत्य के विकास एवं प्रदर्शन स्वरूप में कई नवीन क्षेत्रों तथा नवीन संभावनाओं का जन्म हुआ। देश के विकास के साथ साथ समाज की बदली हुई परिस्थिति व सोच के प्रभाव से कथक नृत्य के प्रदर्शन व स्वरूप में नवीन संभावनाओं व क्षेत्रों का जन्म होने लगा। संगीत व नृत्य स्कूल व कॉलेज में एक विषय के रूप में पढाया जाने लगा। संगीत व नृत्य के क्षेत्र में शिक्षित समाज के शिक्षित लोग जुड़ने लगें। नृत्य कला के इतिहास, विशेषताओं व बन्दिशों को पुस्तकों में संजाकर रखने लगे। शिक्षित समाज के शिक्षाविदों ने, सरकार के सहयोग से नृत्य प्रशिक्षण के अनेकों केन्द्र, संस्थाएँ, विधालय तथा विश्वविधालय विकसित किए, जिसके परिणाम स्वरूप कथक नृत्य अपनी श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होता हुआ विकसित होता गया और इसका प्रचार–प्रसार देश के अलावा कई अन्य देशों यथा–इंगलैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, रूस, सिंगापुर आदि में भी होने लगा। विश्व के लगभग सभी देशों में कथक नृत्य के कलाकार वहीं बस गए तथा अपने स्तर से कथक नृत्य के ट्रेनिंग सेन्टर संचालित कर कथन नृत्य के प्रचार–प्रसार में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं तथा कई तरह के नवीन प्रयोग कर कथक को नई उचांईयॉ तथा नए क्षेत्र प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान काल में कथक नृत्य के प्रदर्शन के क्षेत्र में नवीन संभावनाऐं देखने को मिलती हैं। यथा–

- **एकल नृत्य प्रदर्शन :–** कथक नृत्य की एकल नृत्य प्रदर्शन की परम्परा आरम्भ से ही रही हैं। वर्तमान काल में कथक नृत्य न्रदर्शन के वस्तुक्रम तथा वेशभूषा में बहुत परिवर्तन आया हैं। आज कलाकार, दर्शक व आयोजक सभी को समय का विशेष ध्यान रखना पड़ता हैं, अतः इसको ध्यान में रख

* सहायक आचार्य, नृत्य राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर, राजस्थान।

कलाकार अल्प समय में ही अधिकतम रचनाएँ प्रस्तुत करता हैं तथा अपने प्रदर्शन को रोचक व आकर्षित बनाता हैं। नर्तक अथवा नृत्यांगना के साथ संगत के लिए वाध–वृन्द का भी भरपूर प्रयोग कर प्रदर्शन को उत्कृष्टता प्रदान की जाती हैं। पारम्परिक रूप से जहां नृत्य प्रदर्शन का वस्तुक्रम–देवस्तुति, रंगमंच प्रणाम अथवा सलामी, घाट, आमद, परण, तोड़े, गत–भाव व भाव पक्ष हुआ करता था, वहीं अनेक नवीन रचनाएं यथा–चतुरंग, त्रिवर, तराना, भजन, गजल आदि को अब कलाकार अपने नृत्य प्रदर्शन में सम्मिलित करने लगा हैं। सबसे मुख्य बात ये है कि एकल प्रदर्शन के अतिरिक्त नृत्य कलाकार युगल व समूह रूप में भी कथक नृत्य का प्रदर्शन करने लगे हैं तथा प्रत्येक घराने की विशेषताओं को अपना कर नृत्य प्रदर्शन को आकर्षक बनाने का प्रयास करते हैं।

- **नृत्य–नाटिकाओं का सृजन :–** आधुनिक समय में कथन नृत्य के विकास एवं नवीन संभावनाओं के क्षेत्र में नृत्य नाटिकाओं के सृजनात्मक प्रयोग सबसे बड़ी उपलब्धि हैं। इसका आरंभ श्री उदयशंकर जी की समसामयिक कलाकार मैडम मेनका द्वारा किया गया, उन्होने सर्वप्रथम कथक नृत्य शैली में अनेक नृत्य–नाटिकाओं की रचना की तथा विश्व के अनेक देशो में उनका प्रदर्शन कर प्रशंसा प्राप्त की। मैडम मेनका द्वारा सृजित नृत्य–नाटिकाओं में देव–विजय, मेनका लास्यम, नागकन्या आदि अनेक रचनाऐ थी। इनके पश्चात लखनउ घराने के पं. लच्छू महाराज जी ने अनेक नृत्य नाटिकाओं की रचनाएँ की। सृजन की इस नवीन परम्परा में प्रो0 मोहन राव कल्याण पुरकर, पं0 बिरजू महाराज, श्री कृष्ण कुमार जी, कुमुदनी लाखिया, रोहिणी भोर आदि अनेक उत्कृष्ट कलाकारों ने अपना योगदान दिया। वर्तमान में भी गुरूजनों के मार्गदर्शन में नवीन प्रतिष्ठित कलाकार इस क्षेत्र में अपना–अपना प्रयास कर रहे हैं तथा योगदान दे रहे हैं।
- **ऑनलाईन प्रस्तुतियॉं :–** वर्ष 2020 में संपूर्ण विश्व में फेली महामारी कोविड–19 के प्रकोप से कोई भी व्यवसाय, कला व क्षेत्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। इस महामारी के प्रभाव से संपूर्ण विश्व में लॉक–डाउन कर दिया गया। महामारी के प्रकोप से सभी सांस्कृतिक गतिविधियां ठप्प पड़ गई। इस महामारी का सर्वाधिक प्रभाव कलाकारों की आर्थिक स्थिति पर पड़ा क्योंकि जो कलाकार दैनिक कार्यक्रम करके अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे, वो सभी कार्यक्रम बन्द हो गए, जिस कारण उनके परिवार पर आर्थिक संकट आ गया। इस संकट काल में कलाकारों को सरकार की ओर से कोई आर्थिक मदद भी नहीं मिली, उन्हें अपनी कला का आश्रय छोड़कर अन्य व्यवसाय अपनाने पड़ गए।

इस महामारी के काल में कलाकारों के लिए नेटवर्क का साधन आशा की एक नई किरण लेकर आया, इन्टरनेट के माध्यम से कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन इन्स्टाग्राम, फेसबुक, यू–टयूब आदि सोशल साइट्स पर इस महामारी के लॉक–डाउन काल में करना प्रारम्भ किया। किन्तु ये गतिविधियां केवम सक्षम कलाकारों के द्वारा ही संभव हो पाया। कलाकारों ने अपने वीडियों बनाकर यू–टयूब पर अपलोड़ किए, जिन्हें श्रोताओं ने सुना व देखा और सराहा। कलाकारों के इस प्रयास से उनकी कला का प्रदर्शन तो हुआ किन्तु उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं मिला। महामारी काल में इन्टरनेट के माध्यम से कलाकारों को अपनी प्रस्तुति देने का एक नवीन मं. मिला। इन सोशल साइटस पर प्रस्तुतियों से कलाकारों को इस महामारी के दौर में मानसिक शान्ति तो मिली किन्तु आर्थिक लाभ कुछ भी नहीं मिला।

इन्टरनेट द्वारा ऑन लाईन प्रस्तुतियों के माध्यम से कलाकारों को अपनी कला का प्रचार–प्रसार करने का एक नवीन संभावित क्षेत्र उपलब्ध हुआ हैं। उक्त नवीन माध्यम के परिणामस्वरूप वर्तमान समय में कलाकारों को अपनी सृजनात्क प्रतिभा के प्रयोग के लिए एवं अपनी प्रतिभा का निखारने के लिए एक विस्तृत क्षेत्र मिल रहा हैं तथा नृत्य के क्षेत्र में अनेक नवीन व्यवसायों की भी संभावनाए बढ़ी हैं।

❖◆❖